Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी व्याकरण (कारक) भाग-2, लोकोक्तियाँ

पुस्तक - वीवा हिंदी व्याकरण-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

बच्चो, पिछले सप्ताह हमने 'कारक' के बारे में पढ़ा था जिसमें कारक की परिभाषा, कारक चिह्नों के बारे में पढ़ा था। आज कारक के भेदों के बारे में विस्तार से बताऊँगी। इसलिए सब बच्चे पृष्ठ-67 को खोलें। ध्यान केन्द्रित करके बैठें।

बच्चो! कारक के आठ भेद हैं:-

1. कर्ता कारक :-(ने) कर्ता का अर्थ कार्य को करने वाला है। कर्ता कारक का विभक्ति चिह्न 'ने' है; जैसे- किसान ने बीज बोए। बिल्ली ने दूध पिया। किसान बीज बोता है। बिल्ली दूध पी गई।

बच्चो! उपर्युक्त वाक्यों में से दो वाक्यों में 'ने' परसर्ग का प्रयोग हुआ है और दो वाक्यों में नहीं।

'ने' परसर्ग चिह्न का प्रयोग केवल भूतकाल के वाक्यों में ही होता है; जैसे- प्रेमचंद ने 'गोदान' लिखा।

अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं होता; जैसे- हिरण दौड़ रहा है।

कर्ता कारक की पहचान के लिए 'किसने' अथवा 'कौन' लगाकर प्रश्न करके उत्तर पाए जाते हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Dt 20.5.24
Pg 2 B+

कक्षा - सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (कारक पृष्ठ -68-69) लोकोक्तियाँ

2. कर्म कारक - (को) वाक्य में शब्द के जिस रूप पर क्रिया का फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे- माताजी सब्ज़ी लेने बाज़ार जा रही हैं।
नानीजी बच्चों को कहानी सुना रही हैं।
इन वाक्यों में सब्ज़ी, बाज़ार, बच्चों को शब्द कर्म कारक हैं।

3. करण कारक — (से, के द्वारा, के साथ) कर्ता जिस साधन या माध्यम से कार्य करता है, उस साधन या माध्यम को करण कारक कहते हैं; जैसे- मामाजी कार से मुम्बई गए।
रजत साइकिल द्वारा विद्यालय जाता है।
बच्चो, इन वाक्यों में 'कार' 'साइकिल' वे साधन हैं, जिनके द्वारा क्रियाएँ सम्पन्न हुई हैं, इसलिए ये 'करण' कारक हैं।

4. संप्रदान कारक — (को, के लिए, देने के अर्थ में) कर्ता जिसके लिए कार्य करता है अथवा जिसे कुछ देता है, उसे व्यक्त करने वाला विभक्ति चिह्न संप्रदान कारक कहलाता है; जैसे:-
मैंने पिताजी के लिए चाय बनाई।
बच्चों ने अनाथालय को पुस्तकें भेंट दी।
इन वाक्यों में पिताजी, अनाथालय संप्रदान कारक हैं।

5. अपादान कारक :- (से, अलग होने के अर्थ में,

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

20.5.24

D
Pg 3 D+

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (कारक पृष्ठ - 68-69 लोकोक्तियाँ)

डर, तुलना, सीखना, निकलना, घृणा, दूरी, स्रोत, उत्पत्ति, पढ़ना आदि)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, डरने, तुलना तथा ऊपर दिए हुए भावों का पता चलता है, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे :-

गंगा नदी गंगोत्री से निकलती है।
विनीत सुमित से शांत है।
मैंने संगीत माँ से सीखा।
पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
सीमा गुरु से पढ़ती है।
राम शेर से डर गया।
मेरा घर विद्यालय से दूर है।

उपरोक्त वाक्यों में गंगोत्री से, सुमित से, माँ से, पेड़ से, गुरु से, शेर से, विद्यालय से अपादान कारक हैं।

6. संबंध कारक :- (का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने)

संज्ञा के जिस रूप से दो संज्ञाओं अथवा सर्वनामों के परस्पर संबंध का पता चले, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे :-

आज मोना के भाई का जन्मदिन है।
मेरा घर पास में ही है।
उसने अपना काम कर लिया है।

इन वाक्यों में मोना के, मेरा, अपना, उसने में संबंध कारक है।

(पृष्ठ-3)

Tutorial

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

20.5.24

Pg 4

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (कारक, लोकोक्तियाँ)

7. अधिकरण कारक :- (में, पर, अपर, अंदर) संज्ञा तथा सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के होने के स्थान तथा समय की जानकारी मिलती है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।
अध्यापिका कक्षा में पढ़ा रही हैं।
छत पर कपड़े सूख रहे हैं।
मेज़ के ऊपर पुस्तक रखी है।
कमरे के अंदर बच्चे बैठे हैं।

8. संबोधन कारक :- (हे, ओ, अरे, ए) - जिन संज्ञा शब्दों का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने के लिए किया जाता है, उन्हें संबोधन कारक कहते हैं। संबोधन कारक का संबंध वाक्य की क्रिया से नहीं होता, किसी को संबोधित करने के लिए किया जाता है; जैसे :-
हे ईश्वर! इन्हें सद्बुद्धि दो।
अरे! तुम कब आए।
ए भाई! जरा रास्ता तो बताना।
बच्चो! पंक्ति बनाकर चलो।
उपरोक्त वाक्यों में हे ईश्वर, अरे, ए भाई, बच्चो संबोधन कारक के उदाहरण हैं।
बच्चो, मैंने सभी कारक आपको समझा दिए हैं। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।
गृहकार्य :- सब बच्चे कारक गए इस कार्य को पढ़ेंगे, व अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।
अब मैं लोकोक्तियाँ कराऊँगी। (पृष्ठ 4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

20.5.24

D Pg 5 B+

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (कारक, लोकोक्तियाँ) कहावतें पृष्ठ-139
पुस्तक - वीवा हिंदी व्याकरण-7

लोकोक्तियाँ :-

अनुभव पर आधारित प्रसिद्ध कथन ही लोकोक्ति या कहावत कहलाता है। मुहावरे की तरह इनका भी अर्थ विशेष होता है। इनके प्रयोग से भाषा में विलक्षणता तथा विशेष प्रभाव आ जाता है। कहावतें कथन को भी पुष्ट कर देती हैं। अधिकतर कहावतों के अंत में संज्ञा शब्द आते हैं, जबकि मुहावरों के अंत में क्रिया शब्द आते हैं।

1. आप भले तो जग भला (अर्थ - अच्छे को सभी अच्छे लगते हैं)
वाक्य - रामू इतना ईमानदार और सरल है कि उसे सभी लोग सरल लगते हैं। कहते हैं न आप भले तो जग भला।

2. अंधों में काना राजा (अर्थ - मूर्खों में थोड़ा समझदार व्यक्ति)
वाक्य - अनपढ़ों के गाँव में टूटी-फूटी हिंदी पढ़ने-लिखने वाला व्यक्ति भी अँधों में काने राजा के समान ही साबित होता है।

3. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है
अर्थ - एक बुरा व्यक्ति सभी को बिगाड़ देता है)
वाक्य - भ्रष्ट अफ़सर के आते ही दफ़्तर का वातावरण ही बदल गया। कहते हैं न एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

20.5.24

Dt
Pg 6 B+

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (कारक, लोकोक्तियाँ)

4. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे (अर्थ- स्वयं अपराधी होकर दूसरे को दोषी ठहराना)

वाक्य- एक तो मेरी घड़ी तोड़ दी ऊपर से मुझे ही आँखें दिखाते हो। यह तो उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे वाली बात हो गई।

5. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा (अर्थ:- पहले से दोष होने पर दूसरा दोष भी आ मिलना)

वाक्य- सूरज शराबी तो पहले से ही था, अब जुआ खेलना भी शुरू कर दिया है। इसे ही कहते हैं एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।

6. जिसकी लाठी उसकी भैंस (अर्थ:- ताकतवर की ही जीत होती है)

वाक्य- पराग के पिताजी पुलिस अधिकारी हैं, इसलिए वह सब पर रौब जमाता रहता है। भई सही है, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

7. जो गरजते हैं वो बरसते नहीं (अर्थ:- जो व्यक्ति अधिक बोलते हैं, वे विशेष सफल नहीं होते)

वाक्य:- सतीश केवल धमकी ही देता रहता है। कुछ करने की हिम्मत उसमें नहीं है। कहते हैं न जो गरजते हैं वो बरसते नहीं।

इन लोकोक्तियों को हम यहीं तक पढ़ेंगे। सब बच्चे कराए गए कार्य को पढ़ेंगे व लिखेंगे।

(अंतिम पृष्ठ - 6)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner